भाषा विज्ञान का साक्षात् सम्बन्ध है भाषा विज्ञान के लिए आवश्यक ही नहीं है, बल्कि उसे परिष्कृत करता है, समृद्ध करता है, दूसरे ज्ञान को प्रकाशित करते हुए स्वयं प्रकाशित होता है ——

मनोविज्ञान —— भाषा विज्ञान
शरीर विज्ञान —— "

व्याकरण और भाषा विज्ञान

ज्ञान अनन्त, असीम है, किन्तु मनुष्य ने अपनी सुविधा के लिए अनेक विभाजन किये हैं; इसीलिए प्राचीन काल में, ज्ञान के दार्शनिक स्तर पर विज्ञान और शास्त्र में कोई भेद नहीं था, चिकित्सा शास्त्र भी है और विज्ञान भी; किन्तु व्यावहारिक स्तर पर ज्ञान के विभिन्न अनुशासनों, शास्त्रों एवं विज्ञानों में दूरियां बढ़ती गयी, किन्तु अभी भी शास्त्र एवं विज्ञान में रिश्ते अनेक तरह के दिखाई देते हैं—

- कुछ शास्त्र और विज्ञान — अन्यो-याश्रित हैं

- कुछ शास्त्र और विज्ञान ऐसे हैं, जिनमें सीधे-सीधे कोई साक्षात् और स्पष्ट सम्बन्ध नहीं है जैसे. रसायन — काव्यशास्त्र
  - वनस्पति विज्ञान — भाषा विज्ञान
  - अर्थशास्त्र — भौतिकी

→ सापेक्ष और पूरक — एक के बिना दूसरे का ज्ञान अधूरा है, अपूर्ण है —
इतिहास — राजनीति — अर्थशास्त्र
सभी मिलकर पूर्ण होते हैं।
एक का ज्ञान दूसरे का साधक और उपकारक है
अन्यो-याश्रित